GOVT. BRENNEN COLLEGE CENTRAL LIBRARY THALASSERY

M 27198

Reg. No. : .....

Name : .....

II Semester M.A./M.Sc./M.Com. Degree (Reg./Sup./Imp.) Examination, March 2015
Hindi Language and Literature
(2014 Admn. Onwards)
HIN2C07 : MODERN HINDI POETRY (Upto Nayi Kavitha)

Time : 3 Hours Max. Marks : 80

I. **निर्देश : पाँच** प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए – **(5×1=5)**

1) द्विवेदी युगीन दो पत्रिकाओं के नाम लिखिए।
2) प्रयोगवाद के शीर्षस्थ पाँच कवियों का उल्लेख कीजिए।
3) मुक्त छंद किसे कहते हैं ?
4) प्रगतिवादी कविता की दो विशेषताएँ लिखिए ।
5) 'दूसरा तारसप्तक' के कवियों का नाम बताइए।
6) छायावाद के चार स्तंभों के नाम लिखिए।
7) रामनरेश त्रिपाठी की दो रचनाएँ।
8) कामायानी के प्रमुख पात्र किसके प्रतीक है ?
9) असाध्यवीणा का संदेश लिखिए ।

II. **निर्देश : तीन** प्रश्नों के उत्तर कम से कम **150** शब्दों में लिखिए। **(3×5=15)**

10) ''कामायनी' की दार्शनिकता पर विचार कीजिए।
11) प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।
12) खडीबोली पद्य के विकास में 'सरस्वती' पत्रिका के योगदान पर लिखिए।
13) 'नागर्जुन विद्रोही कवि है' – स्पष्ट कीजिए।
14) माखनलाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए।

III. **निर्देश :** किन्हीं **तीन** प्रश्नों पर कम से कम **300** शब्दों में निबंध लिखिए। **(3×12=36)**

15) 'अज्ञेय व्यक्तिवादी कवि अवश्य है पर वे समाज विरोधी नहीं हैं' इस कथन का विश्लेषण कीजिए।
16) नयी कविता की विशेषता के संदर्भ में मुक्तिबोध की कविता अंधेरे में की अलोचना कीजिए।

P.T.O.

17) 'कामायनी मानवता के विकास का महाकाव्य है' - इस कथन की समीक्षा कीजिए।

18) पठित कविताओं के आधार पर निराला की प्रगति चेतना को स्पष्ट कीजिए।

19) द्विवेदी युगीन कविता के क्षेत्र में मैथिलीशरण गुप्तजी के योगदान पर विचार कीजिए।

IV. **निर्देश : चार** प्रश्नों की समीक्षात्मक व्याख्या कीजिए। **(4×6=24)**

20) शैल निर्झर न बना हतभाग्य,
गल नहीं सका जो किहिम - खंड,
दौड़ कर मिला न जलनिधि - अंक
आह वैसा ही हूँ पाषंड।

21) क्रम - क्रम से हुए पार राघव के पंच दिवस,
चक्र से चक्र मन चढ़ता गया ऊर्ध्व निरलस,
कर-जप पूरा कर एक चढ़ाते इन्दीवर
निज पुरश्चरण इसी भाँति रहे हैं पूरा करा

22) निशा की धो देता राकेश
चाँदनी में जब अलकें खोल
कली से कहता था मधुमास
बता दो मधुमदिरा का मोल

23) भूप, अकिंचन,
अटल शास्ति नित करते पालन
तुम्हारा ही अशेष व्यापार,
हमारा भ्रम, मिथ्याहंकार
तुम्हीं में निराकार, साकार,
मृत्यु-जीवन सब एकाकार।

24) श्री राधा को यह पवन की प्यार वाली क्रियाचें
थोडी -सी भी न सुखद हुई हो गई वैरिणी-सी।
भीनी -भीनी महक मन को शान्ति को
खो रही थी,
पीडा देती व्यथित चित्त को वायू की स्निग्धता थी।

25) 'यों देखकर चिन्तित उन्हें घर ध्यान समरोत्कर्ष का,
प्रस्तुत हुआ अभिमन्यु रण को शूर षोडष वर्ष का।
वह वीर चक्रव्यूह भेदन में सहज संज्ञान था,
निज जनक अर्जुन तुल्य ही बलवान था, गुणवान था।